Chapter 8

bihar board 9th class hindi notes मेरा ईश्वर

मेरा ईश्वर

लीलाधर जगूड़ी

कवि – परिचय

लीलाधर जगूही का जन्म धंगल गाँव , टिहरी , उत्तराखंड में 1 जुलाई , 1944 ई . को हुआ । ग्यारह वर्ष की अवस्था में घर से भागकर अनेक शहरों और प्रांतों में कई प्रकार की जीविकाएँ करते रहे । इसीलिए स्कूल और कॉलेज की शिक्षा में क्रमिकता का अभाव रहा । अंतत : उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य से एम . ए . किया । सन् 1966 से 1980 ई . तक उन्होंने उत्तर प्रदेश के शासकीय विद्यालयों में शिक्षण कार्य किया । वे शिक्षक आंदोलन में सक्रिय रहे , शिक्षक संघ के अध्यक्ष भी रहे । सन् 1981 में उत्तर प्रदेश सूचना एवं जनसंपर्क विभाग से संबद्ध हुए और फिर यहाँ को मासिक पत्रिका ' उत्तर प्रदेश के प्रधान संपादक बने । संप्रति वे सेनामुक्त है और लेखन कार्य में सक्रिय हैं ।

लीलाधर जगूडो की प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं- ' शंखमुखो शिखरों पर ' , ' नाटक जारी है ' , ' इस यात्रा में ' , ' रात अब भी मौजूद है ' , ' बची हुई पृथ्वी ' , ' घबराए हुए शब्द ' , ' भय भी शक्ति है . ' अनुभव के आकाश में चाँद ' , ' ईश्वर को अध्यक्षता में ' । जगूडी को ' अनुभव के आकाश में चाँद ' पर सन् 1997 ई . में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

लीलाधर जगूडौं मूलत : वामपंथी विचारधारा के कवि हैं । कहा जाता है कि उनकी कविताओं पर धूमिल के मुहावरेबाजी और खिलंदडापन का प्रभाव है । परन्तु दोनों कवि साथ लिख रहे थे । दोनों ही अकवितावाद से मुक्त नहीं हैं । दोनों ने मुख्यतः लोकतंत्र के विरुद्ध लिखा है । इस व्यवस्था में वस्तुतः व्यवस्था का हाल बेहाल है – नौकरी , गरोबी , कुर्सी , कानून सब अस्त – व्यस्त शास्तविकता तो यह है कि इस व्यवस्था में हर आदमी कहीं – न – कहीं चोर है किंतु इसे बदलने के लिए कोई कारगर संकेत नहीं देता है । आजादी की जूठी थाली का फैशन यहाँ भी है । जगूड़ी को स्वीकारोक्ति है – संशय की भाषा में बड़बड़ाता हूँ , जो न क्रांति होता है न नजरिया न विचार ।

जगूडी की कविता आधुनिक समय की जटिलता के बीचोबीच परंपरा की अनुगूंजों , स्मृतियों और स्वप्नों को भी संभव करती चलती है ।

कविता का भावार्थ

प्रस्तुत कविता ' मेरा ईश्वर ' लीलाधर जगूड़ी की कविता संग्रह ' ईश्वर की अध्यक्षता से ली गई है । कविता में कवि का ईश्वर एक प्रश्नचिह की वरह है । यहाँ अकल्पनीय मोड़ है , अनजानी उतारने हैं ; अछूती आकस्मिकताएँ हैं । दरअसल जो हमारे समाज में हर क्षण घटित हो रहा है , कविता उसे पकड़कर नए अर्थों में प्रकाशित कर देती है । जीवन की एक नई विपुलता का इतिवृत्ति पाने के साथ – साथ आधुनिक बाजार और वैश्वीकरण से पैदा हुए अवरोध , अनुरोध और विरोध की प्रामाणिक आवाज भी पाठक सुन पाएंगे ।

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि " ईश्वर की अवधारणा " पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है । थकि मनुष्य दुख के क्षणों में ही ईत्वर को याद करता है । इसलिए कवि दुखो न रहने की ठानता है ।

https://www.evidyarthi.in/